P: ISSN NO.: 2321-290X RNI : UPBIL/2013/55327 VOL-6* ISSUE-6* February- 2019
E: ISSN NO.: 2349-980X **Shrinkhla Ek Shodhparak Vaicharik Patrika**

मधु काँकरिया के साहित्य में नक्सलवाद

निर्मम भारद्वाज
शोधार्थी,
हिंदी विभाग,
महाराजा सूरजमल बृज
विश्वविद्यालय,
भरतपुर, राजस्थान, भारत

सारांश

नक्सलवाद कम्युनिस्ट क्रांतिकारियों के उस आंदोलन का अनौपचारिक नाम है जो भारतीय कम्युनिस्ट आंदोलन के फलस्वरूप उत्पन्न हुआ। नक्सल शब्द की उत्पत्ति नक्सलबाड़ी से हुई है। पश्चिम बंगाल के लाल गर्म दिनों में ''नक्सलवादी आंदोलन की नींव पड़ी 1967 में पश्चिम बंगाल के जलपाईगुड़ीजिले के नक्सलबाड़ी ग्राम में, भूमि उसकी हल जिसका जोते जो उसकी तर्ज पर हुए भूमि दखल से पहले सशस्त्र आंदोलन में।"[१] जिसमें भूमिहीन किसानों के लिए जमीदारों की भूमि छीन ली गई तथा भारतीय मजदूरों और किसानों की दुर्दशा के लिये सरकारी नीतियों को जिम्मेदार बताया गया। 1967 में नक्सलवादियों ने कम्युनिस्ट क्रांतिकारियों की एक अखिल भारतीय समन्वय समिति बनाई तथा आंदोलनकारियों ने औपचारिक तौर पर स्वयं को भारतीय कम्युनिस्ट पार्टी से अलग कर लिया और सरकार के खिलाफ भूमिगत होकर सशस्त्र लड़ाई छेड़ दी। यह विद्रोह शोषक और शोषित के बीच एक सशस्त्र आंदोलन के रूप में सामने आया।

70 के दशक में आग की तरह फैले इस आंदोलन में उस समय की युवा पीढ़ी द्वारा सभी प्रकार के नियम कानून को धता बताते हुए सारी कमान अपने हाथों में ले ली गयी। जिसकी जड़ वर्तमान में भी बंगाल की धरती में गहरी धसी हुई है। नक्सलवाद को लाल–आतंक का नाम भी कई बुद्धिजीवियों द्वारा दिया जाता है क्योंकि वर्तमान में इस आंदोलन का स्वरूप अपने मूल रूप से विकृत हो अलग ही आकार ग्रहण कर चुका है। कोई भी क्रांति अपने प्रारंभिक स्वरूप में विराट विचारधारा से ओतप्रोत होती है, किन्तु शनः–शनः वह व्यक्तिगत स्वरुप ग्रहण करती जाती है और अपने मूल स्वरूप से विचलित हो अलग ही मार्ग व विचारों का अनुसरण करती है। 70के दशक में नक्सलवादी आंदोलन कुछ अन्य उद्देश्य व विचारधारा लिए हुआ था परन्तु आज यह एक विकृत और विकराल रूप धारण कर आतंकवाद के समकक्ष माना जाता है।

मुख्य शब्द : नक्सलवाद, विचारधारा, शोषित, पूँजीपति।

प्रस्तावना

मधु काँकरिया द्वारा नक्सलवाद की पृष्ठभूमि पर 'खुले गगन के लाल सितारे' नामक उपन्यास का लेखन सन 2002 में किया गया। जिसमें लाल सितारा शब्द नक्सलवादियों को इंगित किया गया है। मधु काँकरिया की महाबली का पतन, अंत में ईशु, लेकिन कामरेड जैसी कहानियों में भी तत्कालीन नक्सलवाद की उबलती आग का चित्रण किया गया है। मधु काँकरिया की जन्मस्थली पश्चिम बंगाल जो कि मां काली के भव्य स्वरूप की आभा देता है, रही है और यही स्थान जन्मस्थली रहा नक्सलवाद की भी। पश्चिम बंगाल की धरती पर जन्मे इस आंदोलन की युवा द्रष्टा मधु काँकरिया ने इस आंदोलन को उग्र रूप धारण करते हुए न सिर्फ स्वयं देखा बल्कि युवाओं की उस अकथनीय व्यथा को महसूस भी किया था और उसी के परिणाम स्वरुप वह इस विषय पर उपन्यास लिखने को तत्पर हुई। एक इंटरव्यू में वह कहती नजर आती हैं कि–''वह अपने लेखन का प्रारम्भ एक प्रेम कहानी से करना चाहती थी किंतु उस समय के ज्वलंत माहौल और आग उगलते युवाओं के आक्रोश को उनकी लेखनी नजरअंदाज न कर सकी अतः उनका प्रथम उपन्यास 'खुले गगन के लाल सितारे' नक्सलवाद की भेंट चढ़ गया।''[२]

मधु काँकरिया एक महिला कथाकार हैं किंतु उनका लेखन समाज की हर उस समस्या को लेकर चलता है जो वर्तमान समाज में अपने किसी न किसी रूप में विद्यमान है। कुछ सामाजिक समस्यायें ऐसी भी होती हैं जिनका वर्णन एक महिला कथाकार से अपेक्षित नहीं होता है किंतु आलोचना से विचलित न होने वाली लेखिका मधु काँकरिया हर उस समस्या पर लिखना उचित मानती हैं जो उनके अनुसार समाज के व पाठक वर्ग के समक्ष आनी चाहिए और ऐसी ही समस्या है नक्सलवाद की समस्या। एक महिला कथाकार के तौर पर नक्सलवाद

पर यह प्रथम उपन्यास है। जिस कारण मधु काँकरिया का व्यक्तित्व व लेखन कौशल मुझे व्यक्तिगत तौर पर बहुत प्रभावित करता है जिस कारण में इस विषय पर लेख लिखने को सज्ज हूँ।

'खुले गगन के लाल सितारे' उपन्यास का प्रारंभ उपन्यास के उपशीर्षक 'काल को समर्पित एक मुलाकात' से किया गया है जिसके अंतर्गत उपन्यास की नायिका 'मणि' उपन्यास का नायक 'इंद्र' (मणि का प्रेमी है) जो कि स्वयं को नक्सलवादी आंदोलन को भेंट कर चुका है, को खोजते हुए उसके बारे में पता लगाने हेतु... कि क्या घटित हुआ नक्सलवादी आंदोलन के दौरान उसके प्रेमी 'इंद्र'के साथ, जानने के लिए 'मणि' नक्सलवाद के वरिष्ठ और 'इंद्र' के सहयोगी कार्यकर्ता 'गोविन्द दा' से मिलने नक्सलबाड़ी पहुंचती है। उपन्यास का नायक 'इंद्र' एक जमीदार का पुत्र है और स्वंय को नक्सलवादी आंदोलन को सौंप देता है तथा इसी आंदोलन के कारण वह मृत्यु को भी प्राप्त हो जाता है। उपन्यास में दर्शाया गया है कि पूँजीपतियों का ही पूँजीपतियों के विरूद्व ही यह आंदोलन वह जड़ नहीं जमा पाता जो एक जन आंदोलन लोगों के बीच अपनी जड़ जमा लेता है। यही इस आंदोलन की सबसे कमजोर कड़ी साबित भी होती है।

मध्य कलकत्ता के हाथीबगान इलाके के पास से निकली ऐतिहासिक गली 'सिकंदर बगान स्ट्रीट' 1970–72 के उन गरम दिनों में नक्सलवादियों द्वारा उस गली को 'लाल गली'नाम दिया गया था क्योंकि नक्सलवादी आंदोलनकर्ता पुलिस से बचने के लिए उस दशक में इसी गली में आकर पनाह लेते थे। गोविंद दा का मकान भी उसी गली में था । "खुले गगन के लाल सितारे" उपन्यास के पात्र 'गोविन्दा दा' जो कि नक्सलवादी आंदोलन के शीर्ष नेता हैं और सक्रिय रूप से नक्सलवादी आंदोलन में भागीदार हैं। वह 'युगवृति' नामक नक्सली पत्रिका में भी अपने विचार प्रकाशित करते हैं। पुलिस द्वारा गोविन्द दा को सक्रिय हिंसा में भागीदारी के दोषी के रूप में गिरफ्तार कर एंटी नक्सलाइट इंस्पेक्टर 'रमन नियोगी' (जिसे नक्सलवादी आंदोलन को कुचल डालने एवं आंदोलनकारियों के मनोबल को, खूंखार एवं दहशतपूर्ण यातनाओं द्वारा तोड़ डालने हेतु पुरस्कार स्वरूप कई प्रमोशन मिल चुके थे) के पास गिरफ्तार कर ले जाया जाता है। यातना देने का उसका ढंग अलग ही है। थर्ड डिग्री टॉर्चर, सेवंथ डिग्री टॉर्चर, डंडा बेरी, सीकली, चरखी, हैदराबादी गोली, कुछ यातनाओं के नाम जो उसने नक्सलवादियों के दिमाग ठिकाने लगाने के इजाद किये थे।''[३]

आजादी मिले तब तक 20 वर्ष व्यतीत हो चुके थे और कुछ प्रखर बौद्धिक वर्ग एवं छात्र वर्ग विकल्प की खोज में थे। आजादी से सभी का मोह भंग हो चुका था। तत्कालीन युवाओं के उत्साह को उछाल मिलता है उन दिनों चीन में हुई सामाजिक, आर्थिक, राजनैतिक क्रांति से। जिसके रास्ते होकर कभी का अफीमची चीन बहुत पहले ही अपनी रोजी–रोटी और लंगोट की लड़ाई जीत चुका था। माओं–लेनिन की आत्मा उस समय भारतीय युवा वर्ग में पूरी तरह उतर चुकी थी 'उन्हें क्रांति चाहिए थी, तोड़फोड़ चाहिए थी। इन्द्र व उसके सभी सहपाठी इस आंदोलन में स्वंय को सौंप देते हैं। 70 के उस दशक को मुक्ति का दशक बनाना इनका मुख्य उद्देश्य था तथा इन्हीं महान विचारों को कर्म की खाँटी टकसाल में ढालने के लिए 2 सितंबर 1969 को नक्सलवादियों का पहला दस्ता पश्चिम बंगाल के मेदिनीपुर जिले के गोपीबल्लवपुर गांव की ओर सशस्त्र क्रान्ति का बिगुल बजाने पहुँचता है। प्रारंभ में आंदोलनकारी वर्ग शत्रु का सफाया करने के लिए परंपरागत किसानी हथियार मसलन भाला, कुदाल, बरछी, भुजाली का प्रयोग करते थे। मिलिट्री से स्नैच करके भी यह हथियार एकत्रित करते थे। 303 मार्का बुलेट इनके पास मिलिट्री से स्नैच करके ही आती थी। नक्सलवादी कामरेडों को सुरक्षित रखने के लिए स्थानीय लोग गुप्त शेल्टर हाउस चलाते व उनकी मदद भी करते थे। नक्सलवादी कामरेडों में महिला आंदोलनकारी भी सक्रिय थीं। उपन्यास में गोविंद दा की पत्नी बउदी एक महिला कामरेड हैं तथा कई बार पुलिस बैरक पर व एनिलेशन स्क्वायड पर अटैक कर चुकी हैं। इस प्रकार की हिंसा को यह हिंसा नहीं बल्कि वर्गशत्रु का सफाया मानते हैं। इसके पार्श्व में तर्क यह होता है कि जिस प्रकार घर को सजाकर रखने के लिए दीमक, जोंक, मक्खी–मच्छरों को मारना पड़ता है उसी प्रकार यह हिंसा नहीं बल्कि उनका सफाई अभियान है, एक एंटीसेप्टिक समाज के निर्माण की प्रक्रिया में।

क्रांति जिंदाबाद, नक्सलवाड़ी लाल सलाम, लाल क्रांति जिंदाबाद, ध्रुपद मजूमदार जिंदाबाद, चेयरमेन माओं जिंदाबाद के नारे लगाते छात्र हिंसा करते समय खुशी, उत्तेजना और थ्रिल महसूस करते थे। इनके मन मस्तिष्क में सिर्फ एक ही बात थी और वह थी कि 'क्रांति बंदूक की नली से आती है'। इनका तत्कालीन लक्ष्य गांवों को वर्गशत्रुओं, पूंजीपतियों, जमीदारों, प्रतिष्ठित वर्ग से मुक्त कर उन पर अपना अधिकार जमाना और फिर एक से दूसरे गांव, दूसरे से तीसरे होते हुए बहुत शीघ्र ही एक मुक्तांचल की स्थापना करना तथा उसके उपरांत क्रांति की धारा को शहर की ओर मोड़ना उनका मुख्य लक्ष्य था। इनका लक्ष्य उस तबके के लिए लड़ाई लड़ना था जहां जीवन की संपूर्ण आशाएं पूरी तरह बांझ हो चुकी थीं।

मधु काँकरिया उपन्यास में तत्कालीन स्थिति का चित्रण करती हैं कि बंगाल के छोटे से गांव मेंदीनीपुर से निकली यह विचारधारा धीरे–धीरे उगते सूरज की भांति बिहार, उड़ीसा, असम, केरल, आंध्र प्रदेश की सर्वश्रेष्ठ युवा शक्ति एवं बुद्धिजीवियों के बीच मध्यान्ह का सूर्य बन गई। तत्कालीन सत्ताधारी सरकार के आक्रोश का भी इन नक्सलियों को सामना करना पड़ा। ''बिना अरेस्ट वारंट के कॉग्निजेबल अपराध के अंतर्गत नक्सलवादियों की अंधाधुंध गिरफ्तारयाँ की गयी। पुलिस एनकाउंटर के नाम पर नक्सलवादियों को अंधाधुंध शूट किया गया।''४ इंदिरा गांधी के नेतृत्व में बनी सरकार का उद्घोष था आतंकवादियों का पूर्ण उन्मूलन शूट टू किल इफ नेसेसरी के तहत नक्सलवादियों की गोलियों का जवाब गोलियों से दिया गया तथा पुलिस को भी उनसे निबटने के लिए फ्री

हैंड दे दिया गया।''[५] लेकिन कामरेड, महाबली का पतन कहानियों में भी पुलिस द्वारा नक्सलवादियों के साथ किये गए क्रूर व्यवहार का वर्णन किया है।

मधु काँकरिया अपने उपन्यास व कहानियों में जहाँ एक तरफ नक्सलवादियों के साथ की गई पुलिस व सरकारी कार्यवाहियों की नृशंसता का वर्णन करती हैं वहीं दूसरी तरफ वह नक्सलवादियों द्वारा उठाए गए गलत कदमों का वर्णन भी बखूबी करती है। उपन्यास में यह चित्रित किया गया है कि 70वीं सदी के उस गर्म माहौल के बाद जहां जगह–जगह हिंसा व्याप्त थी। पुलिस की गिरफ्तारियां, एनकाउंटर्स चल रहे थे उसी बीच नक्सलवादियों द्वारा चीन के नेता चाऊ–एन–लाई से मुलाकात की गई और चाऊ–एन–लाई द्वारा इसे नक्सलवादियों की एक प्रकार की अनियोजित व्यक्तिगत हिंसा की लाइन से जबरदस्त असहमति जताते हुए इस आंदोलन को अराजकता पूर्ण कदम बताया गया था।"[६] तीव्र गति से बढ़ते इस आंदोलन में वैचारिक दरारें पड़ने लगी थी। पार्टी के शीर्ष नेता दो भागों में विभाजित हो गए थे। ध्रुपद मजूमदार 'इंडिविजुअल–अनीहिलेशन' (वर्ग शत्रु की हत्या) के रास्ते पर चलना चाहते थे, जबकि दूसरे कई शीर्षस्थ नेता चाऊ–एन–लाई की चेतावनी एवं गांव में हुए अपने निराशा पूर्ण अनुभवों के चलते चाहते थे कि पहले लोगों को संगठित एवं शिक्षित किया जाए और फिर व्यक्तिगत रूप से वर्गशत्रु–हत्या की लाइन पर चला जाए। नक्सलवादी कामरेड रोटी की उस संयुक्त लड़ाई को, सार्वजनिक विद्रोह को, धीरे–धीरे व्यक्तिगत बना रहे थे। भारत देश की भूखी नंगी जनता सिर्फ रोटी और गरीबी की भाषा समझती है। वह नहीं समझती चीन और माओ को, नक्सलवाद और श्री काकुलम को जिस देश की जनता ने सिवाय अपने गांव के अलावा कोई दूसरा नाम तक न सुना हो न जाना हो, नक्सली होने का अर्थ उनको नक्सलवादियों का नारा चेयरमैन माओ जिंदाबाद किसी दूसरे सौरमंडल का ही लगेगा, यही सबसे बड़ी गलती साबित हुई इन नक्सलवादियों के लिए कि व्यक्तिगत हिंसा की लाइन ने उन्हें क्रांतिकारी न बनाकर लोगों की नजरों में अराजक बना डाला था।

"चे ग्वारा कहता है कि– "क्रांतिकारियों को लोगों के बीच 'फिश इन दी वाटर', यानी पानी के बीच जैसे मछली रहती है वैसे रहना चाहिए, जबकि नक्सली 'फिश आउट ऑफ वॉटर' हो गए थे।"[७] यह नक्सलवादी भी न तो अपने ही लोगों में अपनी जड़ जमा पाए और न ही तत्कालीन सरकार (इंदिरागांधी सरकार) की ही हमदर्दी इनके साथ थी। सरकार इनकी हिंसा को ज्यादा बढ़ावा देने के विचार में नहीं थी। जिसका परिणाम उन्हें तत्कालीन सरकार द्वारा चलाए गए 'एंटी नक्सलाइट' (नक्सलवादियों का खात्मा) जैसे ऑपरेशन के तहत भुगतना पड़ा। नक्सलाइट किल्ड इन एक्शन, अटैक ऑन पुलिस मैन, पुलिस अटैक इन सेल्फ डिफेंस– आम शब्दावली थी उन दिनों के अखबार की।

मधु काँकरिया अपने साहित्य में यह पक्ष स्वीकार करतीं हैं कि कोई भी क्रांति बिना शिक्षा के कभी सफल नहीं हो सकती। उपन्यास की नायिका मणि जो कि उनकी ही आवाज प्रतीत होती है इन्द्र से कहती है कि जब प्रत्येक व्यक्ति शिक्षित होगा तो अपने अधिकार व अपने साथ हो रहे अन्याय का बदला स्वयं ले लेगा। जबकि नक्सलवादी क्रांतिकारियों का एजेंडा था कि सबको निरक्षर रख शिक्षण संस्थानों को नष्ट कर उन्हें स्वयं पर आश्रित रख उनके ज्ञान को विकसित नहीं होने देना। जो व्यक्ति साधारण जिंदगी जीना चाहते थे उन्हें बुर्जुआ कहकर अपना विरोधी मानना। इन्द्र अपनी प्रेमिका को भी बुर्जुआ कहता है। नक्सलवादी कामरेडो को लोगों को संगठित कर उन्हें शिक्षित कर उनकी शक्ति बढ़ानी थी ताकि वे पुलिस, महाजन, और जोतदारों से भयमुक्त हो सकें।

70 के दशक में शुरू हुए इस नक्सलवादी आंदोलन को व्यापक रूप से फैलाने के लिए पत्र–पत्रिकाओं का प्रकाशन भी किया गया ताकि उनका यह आंदोलन जन आंदोलन का रूप ले सके। 'युगवृत्ति' नामक पत्रिका द्वारा इन्द्र , गोविंद दा, व उनके सहपाठी अपने विचारों को सरकार के विरुद्ध (तत्कालीन इंदिरा गांधी सरकार) प्रचारित करते थे। इस कार्य का संपादन नक्सलियों द्वारा शेल्टर हॉउसों में छुपकर किया जाता था, ताकि वह पुलिस या सरकारी सत्ताधारी किसी भी अधिकारी कर्मचारी की नजर में न आ सके। गोविंद दा की पत्नी शेल्टर हाउस चलाती हैं तथा पत्रिकाओं के माध्यम से विध्वनशक विचारों की सत्ता को सत्ताधारियों के खिलाफ प्रकाशित कर जन–जन में वितरित करने का कार्य भी करती हैं। कई बार वह आंदोलनकारियों के लिए हथियार छुपा कर भी ले जा चुकी थीं। इस प्रकार नक्सलवादियों द्वारा फैलाई गई हिंसा के फल स्वरुप आंदोलन के अग्रणी नेता ध्रुपद मजूमदार इत्यादि तो भूमिगत हो जाते थे किन्तु प्रशासन साधारण नागरिकों व आमजन के विरुद्ध कड़ा रुख अपनाता। पुलिस आम नागरिकों को (जो कि असल में शोषित थे) गिरफ्तार कर उन्हें दुख व प्रताड़ना देती ताकि वह उन आंदोलनकारियों की जानकारी पुलिस को दें तथा आगे से किसी भी नक्सली का साथ न दे। जिस कारण 70 के दशक का यह नक्सलवादी आंदोलन एक निर्लिप्त और सफल आंदोलन नहीं बन पाया क्योंकि इसके चलते शोषितों पर दुख व अत्याचार अधिक होने लगे। पुलिस व सरकार आमजन को इस आंदोलन का मुख्य दोषी मानने लगी। उनकी पीड़ा इस आंदोलन के कारण पहले से कहीं अधिक बढ़ गई 'जिस कारण आम नागरिक इन नक्सलवादियों के विरुद्ध हो गए।

यह देश गांधी का देश माना जाता है जहां हिंसा का कोई स्थान नहीं है जबकि हिंसा और एकमात्र हिंसा ही इन नक्सलवादियों का प्रथम और अंतिम क्रांति का हथियार बन गया था। उपन्यास के पात्र नवल बाबू मणि से कहते हैं कि ''यदि इस देश में माओं, लेनिन, मार्क्स आदि पैदा हुए होते तो वह बंदी बना लिए जाते और चीन में यदि गांधी पैदा होते तो वे ठेल दिए जाते सलाखों के पीछे।''[८] अगर किसी देश के लोगों की मानसिकता हिंसा की भाषा स्वीकार करती है और उस मानसिकता को सफलता का सूचक मानती है तो इसका यह अर्थ कदापि नहीं हो सकता कि हर देश और वहां के वासी इसे सहर्ष

स्वीकार कर लें और सफलता के उसी मुकाम को हासिल करें जो कि पूर्व में किसी देश द्वारा हासिल किया गया है। हर देश की संस्कृति, भूगोल, क्षमता और मानसिकता के पैमाने अलग होते हैं। उनकी विचारधारा और सोच भी भिन्न होती है फिर क्रांति का ऐसा आधार जो की सफलता से कोसों दूर था। इसलिए विरोध का वह रास्ता अख्तियार करना चाहिए जो सबको साथ लेकर चलने वाला हो। हिंसा का कोई तत्व ऐसे आंदोलन में नहीं होना चाहिए। आंदोलन ऐसा हो जिसका साथ आमजन भी दे सके, न की उधार के विचार, आंदोलन, मानसिकता, माओं, लेनिन, मार्क्सवाद को अपनाना उचित है। गांधी के इस देश में विभिन्न आंदोलन की पृष्ठभूमि विद्यमान रही है जो कि सफलता के शिखर पर पहुंचे थे। गांधी जी द्वारा अनेक अहिंसक आंदोलन तत्कालीन ब्रिटिश सत्ता के विरोध में किए गए जो कि सफलता के मुकाम पर पहुंचे थे। भारत की पूर्व पृष्ठभूमि पर आधारित आंदोलन ही भारत के लिए श्रेष्ठतर होता सकता है न कि उधारी की मानसिकता व विचारधारा से प्रभावित आंदोलन। प्रत्येक देश का भौगोलिक वातावरण, सोच व संस्कृति तथा प्रत्येक क्षेत्र विशेष की मानसिकता सभी कुछ भिन्न–भिन्न होते हैं अतः उनकी जरूरतें व विरोध का तरीका भी भिन्न–भिन्न ही होता है। किसी का अनुसरण कर कोई मानसिकता अपनाना तथा बाहरी विचारों को आत्मसात कर वह सफलता प्राप्त नहीं कर पाता जो सफलता मौलिक विचार, मौलिक आंदोलन दिला सकता है। इस देश को जरूरत है स्वयं के मौलिक विद्रोह की, मौलिक आवाज की, मौलिक आंदोलन की, न कि उधार के विचार और उधार के आंदोलन की ।

अध्ययन का उद्देश्य

चूंकि हमारे समाज में समस्यायें बहुत अधिक हैं किंतु उन पर दृष्टि बहुत कम की है अतः सामाजिक समस्याओं को अपने साहित्य का अंग बनाने वाली लेखिका मधु काँकरिया के साहित्य का विश्लेषण तथा शोधपत्र के माध्यम से नक्सलवाद जैसी समस्याओं की गंभीरता को पाठक वर्ग के समक्ष रखना इस पत्र का उद्देश्य है।

निष्कर्ष

मधु काँकरिया का नक्सलवादी साहित्य यह स्पष्ट करता है कि नक्सलवादी आंदोलनकारियों के अनुभवों की पृष्ठभूमि में तेभागा आंदोलन था। जो कि 1946–1947 में किसानों और जमीदारों के बीच हुआ था। वह आंदोलन 'तेभागा आंदोलन' के नाम से जाना जाता है क्योंकि उस आंदोलन का दर्शन था फसल का तीन भाग किसान का और एक भाग भूमिपति का। वह आंदोलन सफल रहा था क्योंकि तेभागा और तेलंगाना जैसे आंदोलन किसानों की अपनी सोच की भूमि से फूटे थे जबकि नक्सलवादी आंदोलन चीन के मॉडल पर बाहर से आयात किया गया एक क्रांति दर्शन था। अब मरुभूमि के किनारों का पौधा मानसरोवर के निकट तो पनप नहीं सकता था। जिंदगी में कोई भी रास्ता बना बनाया रास्ता नहीं हो सकता यह बात नक्सल आंदोलनकारी नहीं समझ सके। नक्सलवादियों द्वारा अपनी संस्कृति, अपने इतिहास और अपने समाज के आलोक में अपना माओं, अपना लेनिन, अपना मार्क्स, अपना चे–ग्वारा स्वयं गढ़ना था, न कि चीन के विचारों की उधारी को आगे बढ़ाना था।

सुझाव

मधु काँकरिया के नक्सलवादी साहित्य के अध्ययन के उपरांत यह कहा जा सकता है कि हर देश और समाज की अपनी अलग मानसिकता व जरूरत होती है उन्हीं के अनुसार आचरण करना चाहिए न कि किसी की नकल करके अपने विचारों के विरुद्ध आचरण करना चाहिए। कोई भी क्रांति जब परंपरा एवं संस्कृति के अनुरूप ढलने के बजाय परंपरा एवं संस्कृति को ही अपने अनुरूप ढ़ालने लगे तो वह लोगों के बीच जड़ नहीं जमा पाती। न ही वह सफलता के शिखर पर पहुंच पाती है, वरन उसके विपरीत वह सम्पूर्ण समाज की किरकिरी के साथ–साथ वह समाज के लिए घातक साबित भी होती है। व्यक्तिगत हिंसा से कभी किसी का कल्याण नहीं हो सकता। आजादी के समय हमारे देश के क्रांतिकारियों ने अंग्रेजो के विरुद्ध हिंसा का मार्ग अपनाया था क्योंकि वह इस भूमि की पैदाइश नहीं थे और उन्हें अपनी मिट्टी से भगाना क्रांतिकारियों का लक्ष्य था। किन्तु नक्सलवादियों द्वारा अपने ही जाति भाइयों और मिट्टी के साथी के विरुद्ध हिंसा का मार्ग चुनना मर्यादा के विरुद्ध मार्ग था।

अंत टिप्पणी

1. *खुले गगन के लाल सितारे–उपन्यास–मधु काँकरिया–पेपर बैक संस्करण, किताबघर प्रकाशन–नई दिल्ली–2012–पृष्ठ संख्या–12 ।*
2. *A interview of madhu kankariya saw on YouTube channel taken by alok kumar shree vastav published 22 may 2018।*
3. *वही पृष्ठ संख्या– 28 ।*
4. *वही पृष्ठ संख्या– 119 ।*
5. *वही पृष्ठ संख्या– 109 ।*
6. *वही पृष्ठ संख्या– 121 ।*
7. *वही पृष्ठ संख्या– 21।*
8. *वही पृष्ठ संख्या– 99 ।*